M.A. Semester-II
Philosophy CC-07

सर्वोदय की परिकल्पना एवं वर्तमान संदर्भ

डॉ. रागिनी कुमारी * एसोसियेट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र केन्द्र महाराजा कॉलेज, आरा

'सर्वोदय' महात्मा गाँधी के समाज-दर्शन का एक मौलिक आदर्श है। सर्वोदय दो शब्दों के मेल से बना है 'सर्व', एवं 'उदय'। इसका तात्पर्य है- सबों का उदय या सबों का विकास। यूँ तो गाँधी के सम्पूर्ण सामाजिक, राजनैतिक दर्शन के लिए 'सर्वोदय दर्शन' शब्द का प्रयोग किया जाता है।[1] गाँधीजी जिस आदर्श समाज की कल्पना करते थे, उसे 'सर्वोदय समाज' कहा जाता है। गाँधीजी के बाद बिनोबा भावे का भूदान-ग्रामदान आंदोलन भी 'सर्वोदय आन्दोलन' कहा जाता हैं, इसमें जय प्रकाश नारायण की भी अहम भूमिका रही है।

सर्वोदय का आदर्श हमारी भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल से चली आ रही है, तभी तो यह आदर्श सामने आता है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तुनिरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःखमाप्नुपात ।।[2]

जैनाचार्य सामन्तभद्र के विचारों में भी सर्वोदय का आदर्श निहित है। उन्होंने कहा है-

''सर्वापदामन्तरं निरन्त सर्वोदय तीर्थभिदं तवैव।''[3]

उपरोक्त बातों से सर्वोदय के आदर्श की प्राचीनता परिलक्षित होती है। महात्मा गाँधी जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन टू दि लास्ट' को पढ़कर काफी प्रभावित हुए और उन्होने इस पुस्तक का अनुवाद गुजराती भाषा में किया, जिसका नाम सर्वोदय दिया। सर्वोदय के सिद्धांत में तीन बातों पर बल दिया गया है[4]- (1) व्यक्ति का श्रेय समष्टि के श्रेय में निहित है। (2) एक नाई का कार्य भी अधिवक्ता के कार्य के समान महत्वपूर्ण है, क्योंकि सभी व्यक्तियों को अपने कार्य में स्वयं की आजीविका प्राप्त करने का समान अधिकार है। और (3) शारीरिक श्रम करनेवाले का जीवन ही सच्चा और सर्वोकृष्ट जीवन है। ये तीनों बाते आपस में परस्पर सम्बद्ध है।

अतः, स्पष्ट है कि गाँधीजी के अनुसार सर्वोदय का अर्थ सम्पूर्ण समाज का सर्वतोमुखी विकास से है। सर्वोदय व्यक्ति और समाज दोनों का सर्वांगीण उदय की परिकल्पना है। सर्वोदय समाज से तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए समाज में स्वतंत्रता होगी और समाज में अधिक से अधिक समानता होगी। इसमें प्रत्येक को विकास के अधिक से अधिक अवसर प्राप्त होंगे। ऐसे समाज में जीवन सामूहिक होगा, ताकि साहित्य, कला और विज्ञान की उन्नति होगी और मनुष्य का बौद्धिक एवं आध्यातिमक विकास होगा। यानी सर्वोदय व्यक्ति विशेष या अधिक से अधिक लोगों की भलाई की बात नहीं करता, बल्कि यहाँ पूरे समुदाय की भलाई की बात कही गई है।

Scanned with CamScanner

सर्वोदय और उपयोगितावाद में अन्तर है। मिल और बेन्थम का उपयोगितावाद अधिक से अधिक लोगों के भौतिक सुख की बात करता है, किन्तु सर्वोदय सबों के भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार के कल्याण की बात करता है। उपयोगितावादी दूसरों के लिए कोई त्याग नहीं करता, लेकिन सर्वोदयी दूसरों के लिए मर-मिटने को भी तैयार रहते हैं। सर्वोदय की उक्ति है-"अन्य को जिलाने के लिए मेरा।"

सर्वोदय का 'सर्व' शब्द संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों भाव को समाविष्ट किये हुए है। यह एक आत्मपूर्णता का विचार है और आत्मपूर्णता का विचार से तात्पर्य सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास से है। गाँधीजी का सर्वोदय विचार अद्वैत-तत्व दर्शन को व्यवहारिकता में परिणत करने का प्रयास है। यूँ तो सर्वोदय का विचार भारत में अति प्राचीनकाल से चला आ रहा हैं। किन्तु, गाँधीजी का सर्वोदय विचार प्रांचीन चिन्तकों से भिन्न उस माने में है कि अधिकतर भारतीय चिन्तकों ने दर्शन और धर्म को व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित रखा, किन्तु गाँधीजी ने उसे सामाजिक जीवन में लागू करने का प्रयास किया है।

गाँधीजी जीवन का चरम लक्ष्य आत्मसाक्षात्कार को मानते हैं। परन्तु इस आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति का विचार भी व्यक्तिगत नहीं, बल्कि समस्त मानव समुदाय के साथ सामंजस्य स्थापित कर सबके अधिकतम हित की सिद्धि के लिए प्रयत्न से है। इसी मूलभूत एकता के कारण जब एक व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास होता है, तो वह दूसरे व्यक्ति के विकास का विरोधी नहीं होता। अगर एक का पतन होता है, तो उस अंश में सारे संसार का पतन होता है। वह ईश्वर आत्मा तथा अद्वैत विचार है और इसी से सर्वोदय का विचार पुष्पित एवं पल्लवित होता है।

सर्वोदय समाज राज्यविहिन होगा। यहाँ राज्यविहिन कहने का तात्पर्य है कि सर्वोदय समाज में राज्य की कल्पना बाद में होगी। पहले ग्राम-राज्य (Government by the Village)बनेगा। फिर ग्राम-राज्य के बाद रामराज की स्थापना स्वत: हो जायेगी। धीरे-धीरे राज्य का विकास होगा, लेकिन गाँधीजी प्रतिनिधात्मक लोकतन्त्र को स्वीकार नहीं करते, क्योंकि ऐसे लोकतंत्र में राजनैतिक दलों का बर्चस्व होता है। साथ ही दलगत भावना के कारण एक दूसरे के प्रतिद्वन्दी सदैव भ्रामक प्रचार -प्रसार करते रहते है। गाँधीजी राज्य विहिन समाज को आदर्श मानते थे। लेकिन व्यवहार में इस आदर्श को पूरी तरह प्राप्त करना संभव नहीं है, इसलिए उन्होंने अमेरिकन विचारक थोरो के विचार को अपनाया कि वह सरकार सर्वश्रेष्ट है, जो कम से कम शासन करे।[5] सर्वोदयी विचारक शंकर देव के विचार में अहिंसा और सत्य के आधार पर स्थापित वर्गविहीन, जाति-विहीन, शोषण विहीन प्रत्येक व्यक्ति एवं समूह का सर्वांगीण विकास करने के अवसर और साधन की उपलब्धता ही सर्वोदय का उद्देश्य है। प्लेटो तथा हेगेल का विचार कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व की पूर्णता ही मानव जीवन का चरम लक्ष्य होना चाहिए, सर्वोदय के समान है। पर एक बिन्दू पर आत्मपूर्णता विचार सर्वोदय से भिन्न है। प्लेटो तथा हेगेल के विचार का सम्बन्ध व्यक्तिक आत्मपूर्णता से है, जबकि सर्वोदय का सम्बन्ध सामाजिक आत्मपूर्णता से है। डार्विन ने बल को ही जीवन विचारा, हक्सले ने सह अस्तित्व को पर सर्वोदय में उदय का अर्थ है सह

Scanned with CamScanner

सम्पन्नता। सर्वोदय कहता है- "तुम दूसरों को जिलाने के लिए जीयो"।[6] अपने जीवन को सम्पूर्ण बनाना या जीवन सर्वत्र सम्पन्न बनाना शारीरिक और आध्यात्मिक सम्पन्नता का आदर्श ही सवोर्दय है।[7]

सर्वोदय विचार में सम्पूर्ण सामाजिक परिर्वहन की कल्पना की गई है। यहाँ त्याग के द्वारा हृदय परिवर्त्तन, तर्क के द्वारा विचार परिवर्तन, शिक्षा के द्वारा सरकार परिवर्त्तन और अहिंसा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन पर जोर दिया गया है। सर्वोदय योजना अन्तर्गत वर्त्तमान प्रतियोगी अर्थ-व्यवस्था का अन्त कर सहयोग पर आधारित सामाजिक अर्थ-व्यवस्था स्थापित करने की योजना बनाई गई। साथ ही उद्योगों का विकेन्द्रीकरण करने तथा बैंक और बीमा कम्पनियों का राष्ट्रीकरण करने की बात कही गई।

सर्वोदयी विचारक विनोबा भावे के विचारानुसार समाज में आर्थिक, नैतिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में कोई विषमता या भेद-भाव नहीं होना चाहिए। अत:, सर्वोदय के अन्तर्गत निहित लक्ष्यों की सिद्धि करने के लिए सर्वोदयी आदर्श को कार्यरूप देने के लिए 'सर्वोदय समाज' की स्थापना की गई। सर्वोदय मानव जाति के समक्ष एक नवीन जीवन पद्धति एवं नवीन सभ्यता प्रस्तुत करता है। विनोबा जी ने 1951 में 'सर्वोदय आन्दोलन' शुरू किया तथा गॉधीजी के शिष्य के रूप में गाँधीवादी आदर्शों को साकार रूप देने का संकल्प लिया। इस प्रकार सर्वोदय को साकार रूप देने का प्रयत्न गाँधीजी एवं विनोबा जी के द्वारा किया गया।

किन्तु, गाँधीजी ने जिस सर्वोदय समाज की कल्पना की उसे पूर्णत: साकार रूप नहीं दे सके। उनकी कल्पना कोरी कल्पना ही रह गई। इसका कारण सर्वोदय की कल्पना में कुछ कमियाँ रही।

गाँधीजी ने अपने सामाजिक, राजनैतिक चिन्तन में मूल्यों और नैतिकता को मुख्य स्थान दिया। साध्य और साधन की एकता पर बल दिया, जिसे उनके राजनैतिक चिन्तन की विशेषता कही जा सकती है। किन्तु, गाँधीजी जहाँ एक ओर राजनीति को नैतिकता से जोड़ते थे, वहीं दूसरी ओर वे स्पष्ट तौर से नैतिकता को संगठित धर्मों से जोड़ते थे। अपने सामाजिक, राजनैतिक चिन्तन को व्यक्त करने के लिए उन्होनें राम-राज्य जैसे शब्द का इस्तेमाल किया, जिसका सम्बन्ध हिन्दू धर्म से है।[8] गाँधीजी का धार्मिक दृष्टिकोण भी सामाजिक विसंगति का कारण बना । उनके द्वारा की गई वर्ण व्यवस्था की व्याख्या तथ्यों के अनुरूप नहीं है।[9] इसलिए एक ओर वर्ण का समर्थन और दूसरी ओर जाति का विरोध एक बहुत बड़ी तार्किंत असंगति है।[10]

फिर भी आज के यांत्रिक युग में गाँधीजी के सर्वोदय विचार की आवश्यकता महसूस की जा रही है और उसे साकार करने का प्रयास किया जा रहा है। यह बात अलग है कि पूर्णत: गाँधीवादी विचारधारा को अपनाना आज के समाज और परिस्थिति में संभव नहीं है। फिर भी गाँधी के कुछ विचारों पर अमल करने की कोशिश की जा रही है।

वर्त्तमान समय में गाँधी के ग्राम-स्वराज के विचार को भारतीय संविधान में अपनाने का काफी हद तक प्रयास किया गया है। राज्य के नीति निदेशक तत्त्व

Scanned with CamScanner

(Directive Principles of state policy) के अनुसार- ''राज्य ग्राम पंचायतो का संगठन करने के लिए कदम उठायेगा और उनको ऐसी शक्तियाँ और प्राधिकार प्रदान करेगा जो उन्हें स्वायत शासन की इकाइयों के रूप में कार्य करने योग्य बनाने के लिए आवश्यक हैं'' (धारा 40)। संविधान के लागू होने के बाद से अबतक कई प्रान्तों में पंचायती राज्य-व्यवस्था लागू भी की गई, लेकिन इसे सुचारू रूप से चलाया नहीं जा सका, क्योंकि कई बार पंचायतो के चुनाव नियमित रूप से नहीं हो पाते थे और कई बार उन्हें समय से पहले विघटित कर दिया जाता था। किन्तु, अब 73 वें संविधान संशोधन द्वारा पंचायती व्यवस्था को ठोस आधार दिया गया है। पंचायतों की संरचना, शक्तियॉ कार्यकाल, प्राधिकार और उत्तरदायित्व को स्पष्ट से परिभाषित किया गया है। पंचायतो के चुनाव करवाने एवं प्रावधानों को लागू करने के लिए भी समूचित व्यवस्था की गई है। आशा है कि इस संविधान संशोधन के पूरी तरह से लागू हेने के बाद देश भर में पंचायतें सुदृढ़ हो जायेगी।

निष्कर्षत: यह कहना अनुचित नहीं होगा कि गाँधीजी का सर्वोदय विचार का पालन ग्राम-स्वराज्य या पंचायती राज के रूप में करना सर्वोदय के आदर्श का अंशत: पालन करना है। किन्तु, गाँधीजी के सर्वोदय के आदर्श को सम्पूर्ण व्यक्ति एवं समाज के हरेक क्षेत्र में लागू करने में आज हमारा समाज एवं संविधान सफल नही हो सका है।

आज का युग मशीनी युग है। हम अपने जीवन में अधिकांश कार्य मशीनों द्वारा कर रहे हैं। इससे व्यक्ति की श्रम की महत्ता कम हो गई हैं, जबकि गाँधीजी शारीरिक श्रम को महत्वपूर्ण स्थान देते थे। आज कई तरह के विध्वंशकारी शस्त्रों का प्रयोग किया जा रहा है, जो गाँधीजी के अहिंसा सिद्धांत के विपरीत है, तथा मानव का अस्तिव भी खतरे में है। साथ ही वैयक्तिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में कई प्रकार की समस्याएँ अपने जटीलताओं के साथ पाई जाती हैं।

संदर्भ-सूची

1. डॉ. रमेन्द्र; **समाज और राजनीति दर्शन,** मोतीलाल बनारसी दास, प्रथम संस्करण 2005 पृ. 259
2. धर्माधिकारी, दादा; **सर्वोदय दर्शन,** सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी 1958, पृ. 5
3. वही
4. गाँधी मो.क.; **सर्वोदय,** नवजीवन प्रकाशन, अहमदावाद प्रस्तावनो पृ.-3.1
5. दत्त, डी.एम.; **द फिलॉसफी ऑफ महात्मा गाँधी,** कलकत्ता यूनिवर्सिटी प्रेस, कोकाता, 1968, पृ. 153
6. भावे, विनोवा; **हरिजन सेवक** 17.4.1949 पृष्ठ 56.
7. धर्माधिकारी, दादा; **सर्वोदय दर्शन,** पूर्वोक्त, पृ. -59
8. डा. रमेन्द्र; **समाज और राजनीति दर्शन,** पूर्वोक्त, पृ. 260
9. वही, पृ. 267
10. वही, पृ. 267

Scanned with CamScanner